१५ अगस्त

ये १५ अगस्त का जश्न,
दो देशों की आजादी का है
यां एक के विभाजन का ?

शहीदों की कुर्बानी
कम पड़ गयी थी शायद,
जो नर्शंस हत्याकांड
रचाए थे हमने ?

कगाज़ के नक्शे पर खींची लकीरें
फीकी न पड़ जाएँ कहीं,
क्रोध और नफ़रत की एक सरहद
इसी लिए क्या बनाई थी हमने ?

भावुक हो कहीं
इंसान इंसान से मिल ना जाये,
धर्म की ये दीवार
क्या इसी लिए चुनवाई थी हमने ?

दिये जायेंगे इलज़ाम एक दूजे को
पर अतीत की बेड़ियाँ
नहीं तोड़ पाएँगे हम !
आज़ादी तो पा ली है हमने,
पर अपनी सोच में, ना जाने
कब आज़ाद हो पाएँगे हम ?

अमन की सिर्फ आशा नहीं,
अमन चाहिए अब !
आज़ादी पायी थी जैसे, चलो
अमन की एक क्रांती चलायें अब !
ये विभाजक राजनीती और
आतंकवाद को नकार,
उध्योग और संस्कृति का
व्यापार बढाएं अब !
इतिहास को लहू की ये लत छुडा,
भविष्य को प्रेमजल की कुछ
बूंदें पीलायें अब !

जो इस संघर्ष की हिम्मत नहीं,
यां फिर अमन का लक्ष्य नहीं,
तो जाओ तुम !
मनाओ अपने-अपने देश की आज़ादी की खुशियाँ,
और छोड़ दो मुझे मेरे गम में !
क्योंकी, आज १५ अगस्त है,
हुआ था मेरे देश का विभाजन आज की रात !

– राजीव नंदा